ISSN-0974-2980

अंक–14(3) जुलाई–सितम्बर, 2010 Vol. 14(3) July-September, 2010

निदेशक की कलम से

लाख उत्पादन से जुड़े मुद्दे

संस्थान के 87वें स्थापना दिवस पर लाख उत्पादन से जुड़े मुद्दों पर पणधारियों के सम्मेलन की बहुमूल्य अनुशंसाओं से देश में लाख के विकास के साथ–साथ इससे सम्बंधित विषयों, जिन्हें वर्तमान परिस्थितियों में समाधान करने की जरूरत है, के लिए संरचना निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। यह बैठक कुछ महत्वपूर्ण विषयों के विश्लेषण का एक प्रयास है। ऐतिहासिक रूप से लाख देश के शीर्ष निर्यात सामग्रियों में से एक है। एक समय विदेशी मुद्रा अर्जित करने में इसका दसवां स्थान था, परन्तु देश की अर्थव्यवस्था में तब से बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। यह सामग्री अब आर्थिक रूप से पिछड़े किसानों, खासकर जनजातीय आबादी के आजीविका वृद्धि हेतु एक औजार के रूप में देखा जाता है। लाख उत्पादक क्षेत्र न्यून शैक्षणिक स्तर के साथ, आर्थिक रूप से पिछड़ा, देश का नक्सल प्रभावित क्षेत्र है। इन क्षेत्रों के आर्थिक विकास के लिए लाख की खेती को प्रोत्साहित/सुदृढ़ करना अनिवार्य है।

व्यापार की एक पुरानी सामग्री होने के बाद भी कुछ महत्वपूर्ण नीति संबंधी निर्णय लेने की

इस अंक में

अनुसंधान की उपलब्धियाँ
- कुसमी लाख फसल पर परजीवी और परभक्षियों का प्रकोप
- *कैजेनस कजन* पर रंगीनी लाख की खेती
- लाख फसल के कीट परभक्षियों का प्रबंधन

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण
- भा.प्रा.रा.गों.सं. एवं ट्राइफेड व एम.डी.एम. कॉर्पोरेशन के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर
- लाख आधारित दो वार्निश का बाजार में पदार्पण

आयोजन
- अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष 2010
- नेटवर्क परियोजना समन्वय समिति की बैठक
- हिन्दी दिवस का आयोजन
- संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक
- स्थापना दिवस सम्मेलन
- हास्य कवि सम्मेलन
- अनुसंधान परामर्शदातृ समिति की बैठक

प्रकाशन एवं प्रसार
- अनुसंधान आलेख/लोकप्रिय लेख
- संस्थान के प्रकाशन
- प्रक्षेत्र दौरा

वैयक्तिक
- संगोष्ठी/विचार गोष्ठी/बैठकों में सहभागिता
- मानव संसाधन विकास

विविध
- आगन्तुक
- कार्यभार ग्रहण/पदोन्नति

FROM DIRECTOR'S DESK

Issues related to lac production

The stakeholders' conference on the issues related to lac production, organized by the Institute on its 87th foundation day has led to valuable recommendations which can form the framework for chalking out a roadmap for development of lac in the country as well as key issues, which need to be addressed under the emerging scenario. This is an attempt to analyze some of the important issues deliberated in the meet.

Historically, lac was one of the top export commodities of country; it once stood at tenth position in terms of foreign exchange earned. But the size of country's economy has undergone sea change since then. The commodity is now viewed as a tool for livelihood enhancement of economically backward growers, especially the tribal populace. The lac growing belt superimposes on red corridor of the country, characterized by economically backwardness with low literacy level. Strengthening/promoting lac cultivation is indispensable for economic development of such regions.

Lac, despite being an old traded commodity, there

In this Issue

Research Highlights
- Incidence of insect pests in summer *kusmi* lac crop
- *Rangeeni* lac cultivation on *Cajanus cajan*
- Management of insect predators of lac crop

Transfer of Technology
- MoU between IINRG and TRIFED, MDM corporation
- Launch of two lac based varnishes in market

Events
- International Biodiversity year 2010
- Co-ordination committee meeting of Network Project
- *Hindi Diwas* celebration
- IMC meeting
- Foundation day conference
- RAC meeting
- *Hasya Kavi Sammelan*

Publication & Publicity
- Research articles/Popular articles
- Institute's publication
- Field visit

Personalia
- Seminar/Symposia/Meetings attended
- Human resorce development

Miscellanea
- Visitors
- Joining/Transfer

आवश्यकता है। लाख उत्पादन को प्रोत्साहित करने एवं अनुकूल वातावरण के निर्माण हेतु आवश्यक सरकारी निर्णयों के लिए लाख पर नीति पत्र तैयार करने की सहमति थी। लाख को कृषि सामग्री घोषित करना उसमें से एक था। जंगलों से लाख का संग्रह करना इतिहास बन चुका है। व्यावहारिक रूप से समूचा लाख, उत्पादकों के व्यवस्थित कृषि परिचालन जैसे वृक्षों की छंटाई, वृक्षों पर संचारण तथा उसके बाद प्रबन्धन परिचालन से प्राप्त होता है। देश के लाख उत्पादन में उदासीन संग्रह, जो केवल कुछ स्थानों तक सीमित है, का योगदान नगण्य है। लाख को अन्य लघु वनोत्पाद के समकक्ष रखने से क्रय संबंधी प्रतिबंध तथा अन्तर्राज्यीय आवागमन में बाधा आएगी एवं ऐसी स्थिति लाख उत्पादन एवं व्यापार के लिए प्रतिउत्पादक होगी। लाख प्रसंस्करण केन्द्र समूह केवल कुछ राज्यों मे है। अतः लाख का मुक्त आवागमन उत्पादकों को बेहतर मूल्य सुनिश्चित करेगा। इसके अतिरिक्त राज्य के बीच प्रचूर से अभाव वाले क्षेत्रों में बीहन लाख (बीज सामग्री) जिसकी कटाई उपरांत आयु बहुत ही कम है, का निर्वाध एवं समय से परिवहन हो सकेगा।

Release of compilation of talks delivered during the conference

जलवायु की प्रतिकूलता लाख की फसल पर बहुत प्रभाव डालती है, क्योंकि कीट स्थायी रूप से परिपालक पौधे से जुड़ जाता है तथा खराब मौसम में कहीं अस्थायी शरण नहीं ले सकता है। ऐसा देखा जा रहा है कि हाल के वर्षों में विशेषकर प्रमुख लाख उत्पादक राज्यों झारखंड एवं प. बंगाल में मौसम की सामान्य स्थितियों में बदलाव आया है, जिससे ग्रीष्मकालीन रंगीनी लाख उत्पादन में गिरावट आई है। लाख उत्पादकों के इस जोखिम के निदान हेतु फसल बीमा किया जा सकता है। ग्रीष्मकालीन रंगीनी फसल के लिए एक उत्पाद, एक बीमा कम्पनी ने विकसित किया था, जिसका लघु पैमाने पर प्रयोग किया गया। जब उत्पाद किसानों के जोखिम को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करता है, तब प्रीमीयम ज्यादा हो जाता है, जो किसानों के लिए अवरोध है। अतः यह प्रस्ताव किया गया कि इन बीमा योजनाओं को सरकारी अनुदान दी जाए ताकि किसानों पर बोझ कुछ कम हो। यह लाख उत्पादन में बड़े निवेश का मार्ग प्रशस्त करेगा।

लाख उत्पादकों की आय वृद्धि एवं ग्रामीण नियोजन में वृद्धि की अनुशंसा में निजी निवेश, संविदा आधारित खेती, किसानों को उधार प्रदान करना एवं ग्रामीण स्तर पर मूल्यवर्द्धन द्वारा लाख उत्पादन में निवेश वृद्धि पर जोर दिया गया। बैठक में दिए गए एक

is still need for some important policy decisions, which would help strengthening it. There was a consensus for preparation of policy paper on lac, which will contain the required governmental decisions aimed at providing better environment and support for lac production. One of them is declaring lac as agricultural commodity. Collection of lac from the wild is history. Practically all the lac comes from systematic cultivation operations of the lac growers including pruning the trees, inoculation of trees and subsequent management operations. Passive collection is restricted to only some isolated places with insignificant contribution to country's lac production. Thus, equating lac with other minor produce which are collected from the forests would entail procurement restrictions, hamper its interstate movement; such a situation would be counterproductive to lac production and trade. Lac processing centers are clustered in only few States. Therefore, free movement of harvested lac will ensure better growers' prices. Besides, it would also enable unhindered timely transport of broodlac (seed material) across States, from surplus to deficit locations, as broodlac has extremely short post-harvest life.

The vagaries of climate have significant impact on lac crop as the insect is permanently attached to its host plant and cannot take temporary refuge to overcome adverse weather conditions. It has been seen that there had been significant deviations from normal weather conditions in recent years, especially in major lac growing states, Jharkhand and West Bengal leading to a drop in summer *rangeeni* lac crop production. The lac growers, therefore, fear the risk which can be addressed through crop insurance. A product for summer *rangeeni* crop was developed by one insurance company, which was experimented only on a small scale. When the product provides adequate coverage of the risk of the grower, the premium tends to be higher, which becomes prohibitive for the farmer. Thus, it was proposed that government subsidy can be provided to such insurance schemes, to reduce the burden on the grower. This would pave way to greater investment in lac production.

The recommendations related to increasing the income of growers and rural employment stressed on enhancing investment in lac production through private investment, through contract farming, credit support to farmers and value-

प्रस्तुतिकरण में लाख की संविदा आधारित खेती की कार्यप्रणाली का विवरण दिया गया, जिसमें यह बताया गया कि इस व्यवस्था में किसानों के जोखिम को किस तरह कम किया जा सकता हैं इस सम्मेलन की अन्य महत्वपूर्ण अनुशंसा में घरेलु खपत सुदृढ़ करना, जिसके अन्तर्गत किसान स्तर पर मूल्यवर्द्धन एवं ग्रामीण नियोजन के लिए लाख आधारित कुटीर उद्योगों का विकास शामिल था।

लाख की फसल पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव से उबरने के तरीके पर विचार विमर्श के दौरान विशेष ध्यानाकर्षण हुआ। हाल के वर्षों में ग्रीष्मकालीन रंगीनी फसल की देखी गई विफलता एवं फसल प्रबंधन तथा प्रतिस्कंधी कीट/पौधे का प्रयोग संबंधी पहल द्वारा इसे सुधारने तथा कारणों के निदान का कार्य संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

बीहनलाख बहुत जल्द खराब होने वाली सामग्री है। अतः बड़े किसानों एवं वन विभाग के बीहनलाख प्रक्षेत्रों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर बीहनलाख की उपलब्धता सुनिश्चित करने के उपायों पर बल दिया गया।

अगर अन्य अभिकरण एवं व्यक्ति फसल की अवस्था, बीहन लाख की उपलब्धता की जानकारी दें तो संस्थान बीहनलाख संबंधी सूचना इन्टरनेट पर दे सकती है और इस तरह के नेटवर्क को फसल प्रबन्धन के लिए किसानों एवं अन्य अभिकरणों को परामर्श एवं समय पर सलाह देने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

लाख के उत्पादन एवं व्यापार से संबंधित मुद्दों पर विचार विमर्श के दौरान एकमत से लाख निदेशालय के सृजन की बात का समर्थन किया गया। चूकि सम्मेलन विशेष रूप से लाख को संबोधित था, सुझाव इसी सामग्री तक सीमित था। परन्तु उत्पादकों/संग्राहकों के हित के साथ–साथ स्वस्थ्य प्रणाली विकसित करने के लिए सभी प्राकृतिक राल एवं गोन्द के लिए एक निदेशालय/ बोर्ड के गठन की आवश्यकता है। प्राकृतिक राल एवं गोन्द देश के वन एवं उपवन क्षेत्रों से प्राप्त होते हैं तथा वहाँ रहने वाले लोगों के लिए नियमित आय के स्रोत हैं।

अनुदर्शी रूप से पणधारियों का सम्मेलन लाख उत्पादन से संबंधित लोगों के एकीकरण के लिए बेहद उपयोगी रहा। लेकिन यह प्रयास तब ही सार्थक होगा जब समुचित कार्ययोजना एवं इसके कार्यान्वयन के माध्यम से अनुशंसाओं को लागू किया जाए। झारखंड के लिए एक कार्यान्वयन सम्मेलन की योजना बनाई गई है ताकि राज्य में लाख उत्पादन के लिए अनुशंसाओं के आधार पर मार्ग प्रशस्त किया जा सके। नीति निर्माताओं एवं कार्यान्वयन के उत्तरदायी अभिकरणों की एक राष्ट्रीय स्तर की बैठक का प्रस्ताव है जिससे अनुशंसाओं का परिणाम प्राप्त हो सके। यह प्राकृतिक राल एवं गोन्द के क्षेत्र में भारतीय उत्पादन को सुदृढ़ करने में सहायक होगा एवं इस पर निर्भर आबादी की आर्थिक स्थिति बेहतर होगी।

(रंगनातन रमणि)

addition at village level. Methodology for contract farming of lac was elaborated in one of the presentations of the meet, which outlined how farmer's risk would be minimized in such systems. Another important recommendation of this conference was strengthening domestic consumption, which should including value addition at growers' level and lac-based cottage industry development for rural employment.

Another aspect which received attention during the deliberations was the means of overcoming the adverse impact of climate change on lac crops. The institute is currently addressing the reasons for summer *rangeeni* crop mortality witnessed during recent years and its amelioration through approaches involving crop management and resilient insect/plants.

Broodlac is a highly perishable commodity. Therefore, emphasis was placed on measures for ensuring availability of broodlac locally through promoting enterprising farmers and broodlac farms with Forest Department. The Institute volunteered to undertake providing information on broodlac availability on net, if other agencies and individuals provide information on crop condition and broodlac availability; such an information network can also be used for providing tips and timely advice to farmers and other agencies on crop management.

When the issues related to lac production and trade were discussed, the suggestion which came up with unanimous endorsement was creation of a Lac Directorate. Since the conference specifically addressed lac, the suggestion was restricted to this commodity. But, there is need to create a Directorate/Board for all the natural resins and gums which will address the growers'/tappers' interests as well as development of healthy trading system. The natural resins and gums come from forest and sub forest areas of the country and serve as sustainable source of income to the dwellers.

Retrospectively, the stakeholders' conference had been extremely fruitful, leading to consolidation of stakeholders related to lac production. But, this effort would be meaningful only if the recommendations are followed up through appropriate action plans and subsequent implementation. One follow-up meet for Jharkhand has already been planned for taking up the recommendations to develop a roadmap of lac production for the State. A national level meet is proposed to be undertaken involving the policy makers and other implementing agencies, so that the recommendations are translated into results, which would help in consolidating India's position in production of natural resins and gums and using this sector for economic enhancement of the dependent population.

(R. Ramani)

अनुसंधान की उपलब्धियां

बनखेड़ी आबादी की ग्रीष्मकालीन कुसमी लाख फसल पर परजीवी और परभक्षियों का भारी प्रकोप

बनखेडी, मध्यप्रदेश में कुसुम वृक्ष पर जेठवी 2010 की अवधि में लगाए गए बनखेडी आबादी के परभक्षियों एवं परजीवियों के मात्रीकरण के लिए अगस्त महीने में नमूनों को जाली में डालकर प्रयोग किया गया। आंकड़ों के अवलोकन से पता चलता है कि प्रति 10 से.मी. लाख पपड़ी पर *श्यूडोहाइपाटोपा (होल्कोसेरा पल्वेरिया)* (13) एवं *यूपेलमस एमाबिलीस* (4) की भारी उपस्थिति है, परजीवी *यूब्लीमा टैकार्डी* (35), *टेकार्डीफेगस टेकार्डी* (4) एवं *एपेन्टेल्स टेकार्डी* भी जाली से घिरे 10 से.मी. लम्बे पपड़ी से निकले। परिणाम से ग्रीष्मकालीन लाख फसल में परजीवी गतिविधि के अधिक होने का संकेत मिलता है।

(मो. मोनोब्रुल्लाह)

गुजरात में कुसुम पर कुसमी लाख का उत्पादन

गुजरात के डांग जिले के मालेगाँव क्षेत्र में बिना छंटाई किये कुसुम वृक्षों पर 600 कि.ग्रा. बीहनलाख का संचारण कर दो हजार कि.ग्रा. (लगभग) बीहनलाख का उत्पादन किया गया। बीहनलाख का फरवरी में संचारण किया गया तथा जुलाई के प्रथम पक्ष में फसल की कटाई की गई। इन उत्पादों में से 256 कि.ग्रा. बीहनलाख को मोतिया, राजपिपला, बलेठी एवं धनोल में 450 बेर वृक्षों पर तथा रेशमपालन एवं वन उपयोगिता, राजपिपला के अन्तर्गत मालेगाँव एवं वसालखारी में 382 कुसुम वृक्षों पर 850 कि. ग्रा. बीहनलाख का संचारण कराया गया। गुजरात में कुसमी लाख के लगातार उत्पादन के लिए संस्थान के तकनीकी सहयोग से यह कार्य गुजरात राज्य वन विभाग की सहायता से किया गया।

(रंजय कुमार सिंह)

कैजेनस कजन (अरहर) पर रंगीनी लाख की खेती

अक्तूबर 2009 में *कैजेनस कजन* (अरहर) की तीन किस्मों (अगात, सामान्य एवं देर से परिपक्व होने वाली) पर ग्रीष्मकालीन फसल की रंगीनी लाख कीट का संचारण किया गया। सिंचाई के अन्तर्गत अरहर की मध्यम एवं देर से परिपक्व होने वाली किस्मों पर फसल का उत्पादन : निवेश अनुपात क्रमशः 3.57 : 1 तथा 5.09 : 1 रहा जिससे यह पता चलता है कि सिंचाई की स्थितियों में अरहर का लाख की खेती के लिए उपयोग आशाजनक है। इससे प्राप्त बीहनलाख की गुणवत्ता भी संतोषजनक है।

(केवल कृष्ण शर्मा)

RESEARCH HIGHLIGHTS

Heavy incidence of insect pests in summer *kusmi* lac crop of Bankhedi population of lac insect

Quantification of predators and parasitoids of *Bankhedi* population of lac insects raised on *kusum* trees during *Jethwi* 2010 at Bankhedi, Madhya Pradesh was carried out by caging of samples in August. Heavy predation by *Pseudohypatopa (=Holcocera) pulverea* (13) and *Eublemma amabilis* (4) per 10 cm length of lac encrustation was recorded. Besides, parasites *Eupelmus tachardiae* (35), *Tachardiaephagus tachardiae* (14) and *Apanteles tachardiae* (12) also emerged in large numbers (number per 10 cm within parentheses) from the lac encrustation. The results are indicating high parasitic activity in the summer lac crop

(Md. Monobrullah)

Kusmi lac production on *kusum* in Gujarat

Two tons of *kusmi* broodlac was produced on unpruned *kusum* trees by inoculating 600 kg broodlac in Malegaon area, District-Dang of Gujarat in the first phase of operation to demonstrate summer *kusmi* lac production. The crop was raised in February and harvested during first fortnight of July. Out of this, 256 kg was inoculated on 450 *ber* trees at Motia, Rajpipla, Balethi and Dhanol and 850 kg was inoculated on 382 *kusum* trees at Malegaon and Vesalkhari areas under Silviculture and Forest Utilization, Rajpipla to raise the winter crop. This work is funded by Gujarat State Forest Department with technical support of the institute for sustained production of *kusmi* lac in Gujarat.

(R K Singh)

Rangeeni lac cultivation on *Cajanus cajan*

Summer season crop of *rangeeni* lac insect was inoculated on three varieties (early, normal and late maturing) of *Cajanus cajan (Arhar)* during October 2009. Crop on *arhar* under irrigation on medium and late maturing varieties gave an output - input ratio of 3.57:1 and 5.09:1, respectively of broodlac showing the promise of utilizing *arhar* for lac cultivation under irrigated conditions. Quality of the broodlac obtained was also satisfactory.

(KK Sharma)

कतकी फसल प्रदर्शन में पोटैशियम की भूमिका

राँची की परिस्थितियों में पलास वृक्ष पर रंगीनी लाख फसल का उत्पादन, उचित वृद्धि एवं विकास के लिए पोटैशियम एक महत्वपूर्ण पोषक प्रतीत होता है। नियंत्रण की तुलना में पोटैशियम के प्रयोग वाले (250 एवं 500 ग्रा./वृक्ष) सभी वृक्षों में लाख की पपड़ी को बेहतर पाया गया। सितम्बर के मध्य में प्रति वृक्ष (मध्यम आकार के) पोटैशियम ऑक्साइड के 250 से 500 ग्रा. के प्रयोग पर लाख की पपड़ी की औसत मोटाई 1.37 एवं 1.49 मि.मी. थी जबकि नियंत्रण में यह केवल 0.98 मि.मी. थी।

without potassium with potassium

Rangeeni rainy season lac crop raised on *palas*

(सौमेन घोषाल)

Role of potassium in performance of *katki* crop

Potassium seems to be an important nutrient for proper growth, development and yield of *rangeeni* lac insect raised on *palas* trees under Ranchi conditions. Lac encrustation thickness on all the trees with potassium application (250 and 500 g/tree) was found to be superior as compared to control. The average thickness of lac encrustation measured in mid September was 1.37 and 1.49 mm at 250 and 500 g K_2O application per tree (medium sized) as against only 0.98 mm in control.

(S Ghosal)

लाख फसल के कीट परभक्षियों का प्रबंधन

संस्थान अनुसंधान प्रक्षेत्र एवं किसान के खेत में रंगीनी और कुसमी लाख की फसल पर नये रासायनिक कीटनाशी जैसे इन्डेक्साकार्व, स्पीनोसाड, फिप्रोनील, बाइफेनथ्रीन एवं कार्बोसल्फान का प्रयोग कर मूल्यांकन किया गया जबकि जैव कीटनाशी हाल्ट एंड नॉक डब्ल्यू पी का कुसमी लाख फसल पर, लाख कीट परभक्षी पर उसकी प्रभाव क्षमता का मूल्यांकन किया गया। तीनो रासायनिक कीटनाशी तीन प्रमुख लाख कीट परभक्षियों *यूब्लीमा एमाविलीस, श्यूडोहाइपाटोपा पल्वेरिया* एवं क्राइसोपा प्रजाति पर प्रभावी पाया गया एवं लाख फसल की सुरक्षा हुई।

(जयप्रकाश सिंह, अनिल कुमार जायसवाल, मो. मोनोब्रुल्लाह)

Management of insect predators of lac crop

Newer chemical insecticides *viz*., indoxacarb, spinosad, fipronil, bifenthrin and carbosulfan were evaluated on *rangeeni* and *kusmi* lac crops at Institute Research Farm and farmers field whereas biopesticides Halt and Knock WP were evaluated on *kusmi* lac crop for their efficacy against lac insect predators. All the chemical insecticides were found effective against all the three important predators of lac insect *viz*., *Eublemma amabilis*, *Pseudohypatopa pulverea* and *Chrysopa* spp. resulting substantial protection of lac crop.

(JP Singh, AK Jaiswal and Md Monobrullah)

वर्ष 2008–09 की अवधि में लाख का निर्यात

चपड़ा एवं वनोत्पाद निर्यात संवर्द्धन परिषद, कोलकाता से भारत से लाख एवं उसके मूल्यवर्द्धित उत्पादों के निर्यात का आंकड़ा एकत्र किया गया। वर्ष 2009–10 में रू. 110.2 करोड़ मूल्य के 6422.61 टन लाख एवं इसके मूल्यवर्द्धित उत्पादों का निर्यात किया गया। चित्र–1 में मात्रा एवं मूल्य के साथ उत्पाद–वार निर्यात दर्शाया गया है। मूल्य के आधार पर भारतीय लाख के आयातकर्ता 10 अग्रणी देश बांगलादेश, मिस्र, जर्मनी, इन्डोनेशिया, सं.रा.अमेरिका, पाकिस्तान, जॉर्डन, स्वीट्जरलैंड, इंगलैंड हैं। *(चित्र–2)*

Export of lac during 2008-09

Data on export of lac and its value added products from India were collected from Shellac and Forest Products Export Promotion Council, Kolkata. The total export of lac and its value added products during the year 2009-10 was 6423 tons valued Rs.110 crores. Product-wise export in terms of quantity and value has been presented in Fig 1. Top 10 importing countries of Indian lac were: Bangladesh, Egypt, Germany, Indonesia, USA, Pakistan, Jordan, Switzerland, UK and Italy in terms of value. *(fig-2)*

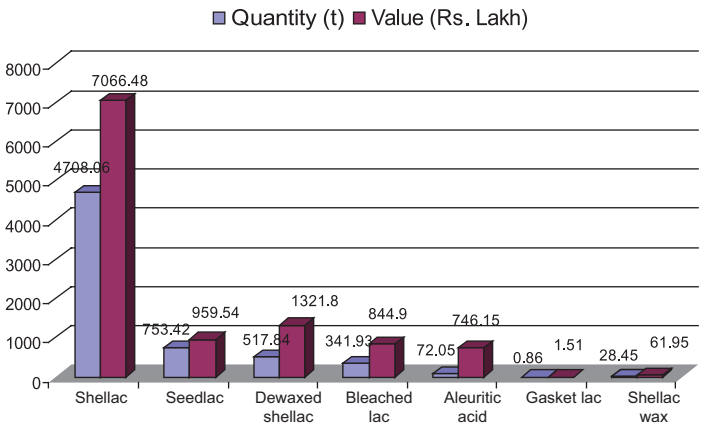

Fig. 1.: Export of value added products from India during 2009-10

(गोविन्द पाल)

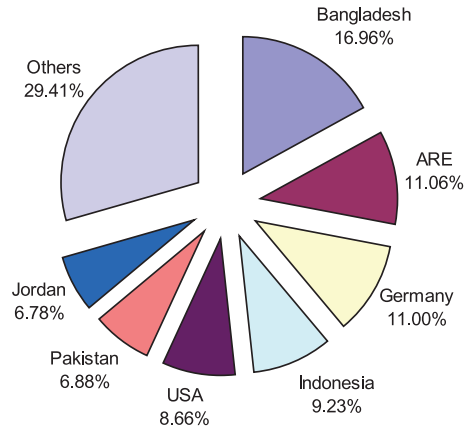

Fig. 2. Relative share of import of different types of lac, in terms of value

(G Pal)

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

संस्थान द्वारा संचालित किये गए प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	प्रशिक्षण के प्रकार	प्रतिभागियों की संख्या	बैच/शिविरों की संख्या
1.	वैज्ञानिक विधि से लाख उत्पादन, प्रसंस्करण एवं उपयोग (एक सप्ताह का कृषक प्रशिक्षण)	259	8
2.	लाख उत्पादन, प्रसंस्करण एवं उपयोग पर एक सप्ताह का प्रशिक्षक प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक कार्यक्रम	49	1
3.	लाख की खेती का प्रक्षेत्र प्रशिक्षण	1899	14
4.	अभिविन्यास कार्यक्रम	444	16
योग		**2651**	**39**

(अनिल कुमार जायसवाल)

Technology Transfer

Training programmes conducted by the Institute

S. No.	Programme	No of Participants	No of Batches/ camps
1.	One week farmers' training course on 'Scientific cultivation of lac, processing and utilization'	259	8
2.	One week trainers' training and educational programme on 'Production, processing and utilization of lac'	49	1
3.	On-farm training on lac cultivation	1899	14
4.	Orientation programme	444	16
	Total	2651	39

(AK Jaiswal)

प्रक्रिया एवं उत्पाद विकास पर प्रशिक्षण

सितम्बर 2010 में घाटकोपर मुंबई के श्री पुनीत बयादा ने जल में घुलनशील लाख एवं गैस्किट चपड़ा सीमेन्ट यौगिक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

भा.प्रा.रा.गों.सं. एवं ट्राइफेड के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

भा.प्रा.रा.गों.सं. राँची एवं भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (ट्राईफेड), राँची के बीच 01 सितम्बर, 2010 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। ट्राईफेड ने रू. 4.05 करोड़ बजट का

Training on Process and Product development

Sri Punit Vayada from Ghatkopar, Mumbai attended a training programme on Water soluble lac and Gasket shellac cement compound in September, 2010.

MoU was signed between IINRG and TRIFED

A MoU was signed between IINRG, Ranchi and Tribal Co-operative Marketing Development Federation of India (TRIFED) Ranchi on 1st September, 2010. A collaborative

''लाख की खेती एवं प्रसंस्करण के द्वारा जनजातियों में नियमित आय के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (एन ए पी)'' शीर्षक समन्वित परियोजना ली है। भा.प्रा.रा.गों.सं. की जिम्मेवारी क्षमता निर्माण, तकनीकी निर्देश एवं फसल के पर्यवेक्षण की होगी। इस परियोजना से झारखण्ड, प. बंगाल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं आन्ध्र प्रदेश सहित छः राज्यों के 6600 जनजातीय परिवार लाभान्वित होंगे।

project entitled "National Action Plan (NAP) for sustainable income generation of tribal through cultivation and processing of lac" was undertaken by TRIFED with a budgetary provision of Rs. 4.05 crores. IINRG will be responsible for capacity building, technical guidance and crop monitoring. The project will benefit 6,600 tribal families of six states *viz.*, Jharkhand, West Bengal, Orissa, Madhya Pradesh, Chhattisgarh and Andhra Pradesh.

भा.प्रा.रा.गों.सं. एवं एम डी एम कारपोरेशन के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

संस्थान के वैज्ञानिक (ववे) श्री मो. फहीम अंसारी द्वारा विकसित संस्थान की प्रौद्योगिकी 'लाख आधारित बहुरंगी दंतपट्टी'' के वाणिज्यीकरण के लिए भा. प्रा.रा.गों.सं., राँची एवं एम डी एम कारपोरेशन, नई दिल्ली के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण हेतु संस्थान के स्थापना दिवस (20 सितम्बर, 2010) के अवसर पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए।

Exchange of MoU between Director, IINRG and CEO, MDM

MoU signed between IINRG and MDM Corporation, Delhi

For the commercialization of institute technology, a Memorandum of Understanding (MoU) was signed between IINRG, Ranchi and MDM Corporation, New Delhi on the foundation day of the Institute (20 September, 2010) for transfer of technology on "Lac based multi-coloured dental plate" which has been developed by Shri MF Ansari, Scientist (SS) of the Institute.

लाख आधारित दो वार्निश का बाजार में पदार्पण

लाख आधारित दो उत्पादों स्पिरिटरहित वुडवार्निश (एम एस वी 005) एवं बहुद्देशीय चमकदार वार्निश को सर्वश्री पी एन पी कारपोरेशन, मुबई द्वारा ''एक्सट्रा ग्लॉस'' एवं ''गेल्वो'' ब्रांड नाम से बाजार में उतारा गया। इन वार्निशों के निर्माण की प्रक्रिया संबंधी प्रशिक्षण, प्रतिष्ठान को संस्थान के वैज्ञानिक द्वारा दी गई। वाणिज्यिक रूप से बाजार में उतारने के लिए प्रतिष्ठान को तैयारी संबंधी सुझाव एवं परामर्श लगातार दिया गया। प्रतिष्ठान ने सूचित किया है कि उत्पाद को बाजार से अच्छी प्रतिक्रिया मिली है।

Launch of two lac-based varnishes in market

Two lac based products, namely, Spiritless Wood Varnish (MSV005) and Multipurpose Glazing Varnish have been launched as brand name "Extra Gloss' and 'Gelwo' respectively by the firm M/s PNP Corporation, Mumbai. Process know-how and training for manufacturing of the varnishes were given to the firm by the Institute. Continuous suggestions and advice has been given to the firm for preparation and launching of the products on commercial scale. The firm reported that the products have received good response from the market.

लाख प्रोत्साहन गतिविधियां

- डॉ. भरत प्रसाद सिंह, प्र. वैज्ञानिक एवं श्री दिलीप कुमार सिंह, त.अ. ने 12 जुलाई 2010 को पलामू जिले के मनिका प्रखंड अन्तर्गत लाली एवं नर बेलवा ग्राम का दौरा किया और 57 किसानों को प्रोत्साहन प्रशिक्षण दिया तथा बीहनलाख बांधने का प्रदर्शन किया और बेर के 50 वृक्षों पर संचारण का निरीक्षण किया। इस क्षेत्र में वन विभाग के साथ बेर पर कुसमी लाख की खेती पहली बार आरंभ की गई है।

Lac promotion activities

- Dr BP Singh, PS and Sri DK Singh,TO visited Lali and Nad Belwa villages under Manika Block of Palamau District, Jharkhand on 12 July 2010 and conducted motivational training for 57 farmers, gave demonstration for broodlac bundling and supervised inoculation on 50 *ber* trees. It is a first effort for introducing *kusmi* lac cultivation on *ber* in the area in association with State Forest Department.

उन्होंने पुनः 13 अगस्त 2010 को उसी क्षेत्र का दौरा कर फसल का पर्यवेक्षण एवं कीटनाशी का छिड़काव करवाया।

They again visited the same area on13 August 2010 for crop monitoring and insecticide spraying also.

आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष 2010

संस्थान में जैवविविधता के महत्व के प्रति कर्मियों को जागरूक करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष के अन्तर्गत 07 जुलाई 2010 को कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. वैभव डी लोहोट एवं श्री अनीस के ने संस्थान के कर्मियों के बीच एक क्वीज तथा जैवविविधता पर एक व्याख्यान आयोजित किया।

Quiz competition organised at the institute

EVENTS

International Biodiversity year 2010

International Biological Diversity Year was observed at the Institute on 7 July, 2010 with a programme to create awareness among the staff about the importance of biodiversity. Dr Vaibhav D Lohot and Mr Anees K conducted a quiz for institute employees and organized a guest lecture by Dr JB Tomar, NBPGR, Ranchi Centre on biodiversity and its importance

लाख से आजीविका वृद्धि के लिए अभिनव प्रयोग पर नाबार्ड प्रायोजित परियोजना का शुभारंभ

संस्थान में 20 जुलाई 2010 को लाख से आजीविका वृद्धि के लिए अभिनव प्रयोग पर नाबार्ड प्रायोजित परियोजना शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। राज्य सभा सदस्य डॉ. राम दयाल मुंडा इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। यह परियोजना प्रदान, उद्योगिनी, महिला जागृति संघ (एम जे एस) जैसे गैरसरकारी संगठनों द्वारा राँची, खूंटी, गोड्डा एवं प. सिंहभूमि जिलों में कार्यान्वित किया जा रहा है। भा.प्रा.रा.गों.सं. इस परियोजना में तकनीकी सलाहकार के रूप में भागीदार है।

Dr. Ramdayal Munda addressing the gathering

Launch of NABARD-sponsored project on innovations for livelihood enhancement in lac

Launch of NABARD sponsored project on innovations for livelihood enhancement in lac was organized at IINRG, Ranchi on 20 July, 2010. Dr Ram Dayal Munda, Member, Rajya Sabha was the Chief Guest during the function. The project is being implemented by NGOs Pradan, Udyogini and Mahila Jagriti Sangh (MJS) in the districts of Ranchi, Khunti, Godda and West Singhbhum. IINRG is a partner in the project for technical advice.

नेटवर्क परियोजना के समन्वय समिति की बैठक

प्राकृतिक राल एवं गोन्द के एच.पी.वी.ए. पर नेटवर्क परियोजना के समन्वय समिति की दुसरी बैठक 17–18 अगस्त 2010 को डॉ. वाइ.एस.पी. बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन में आयोजित की गई। इस बैठक में नेटवर्क परियोजना केन्द्र के प्रधान अन्वेषकों ने भाग लिया। इस बैठक में वर्ष 2009–10 की अवधि में

Co-ordination Committee meeting of Network Project

The 2nd Co-ordination Committee meeting of the Network Project on HPVA of NRG was organized at Dr YSP University of Horticulture and Forestry, Solan during 17-18 August, 2010. The meeting was attended by PIs of the Network project centers. In the meeting, progress during year 2009-

हुई प्रगति की समीक्षा की गई तथा केन्द्रों द्वारा बनाए गए 12वीं योजना प्रस्ताव पर चर्चा की गई। दो दिन की बैठक में प्रतिनिधियों को चीड़ राल संग्रहण के विभिन्न तरीकों का प्रदर्शन किया गया तथा वानिकी एवं बागवानी विश्वविद्यालय के प्रयोगशालाओं को दिखाया गया।

(निरंजन प्रसाद)

10 was reviewed and the XII Plan proposals prepared by the centers were discussed. During the two-day meeting the delegates were demonstrated different methods of pine resin tapping and laboratories of College of Forestry and Horticulture were shown.

(N Prasad)

हिन्दी दिवस का आयोजन

संस्थान में 01 सितम्बर 2010 से 30 सितम्बर 2010 की अवधि में मनाए जा रहे हिन्दी चेतना मास के अन्तर्गत 13 सितम्बर को अपराह्न 2.30 बजे हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। ''कालजयी कवियों का शताब्दी वर्ष'' विषय पर आयोजित व्याख्यान के अन्तर्गत मुख्य अतिथि श्री रणेन्द्र कुमार, प्रसिद्ध साहित्यकार एवं संयुक्त निदेशक, श्री कृष्ण लोक प्रशासन संस्थान, राँची तथा विशिष्ट अतिथि डॉ मिथलेश कुमार सिंह, सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राँची ने अपने विचार प्रकट किये। संस्थान के निदेशक डॉ. रंगनातन रमणि ने अपने संबोधन में संस्थान की गतिविधियों पर चर्चा की तथा राजभाषा कार्य पर प्रकाश डाला। हिन्दी दिवस समारोह आयोजन समिति की अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ने स्वागत भाषण किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंजेश कुमार, त.अ. ने किया।

Hindi Diwas celebration

A view of Hindi Diwal celebration

Hindi diwas was organized in the Institute on 13 September 2010 at 02.30 pm under *Hindi Chetna Mass* being observed during September.

Cheif guest Shri Ranendra Kumar, a renowned literateur and Joint Director, SKIPA, Ranchi and guest of honour Dr. M.K. Singh, Assoc. Professor, Deprtment of Hindi, Ranchi University, Ranchi expressed their views with special reference of *"Kaljayi kaviyon ka shatabdi varsh"*. In his address, Director Dr. R Ramani highlighted the activities of the Institute and use of official language. Dr. Divya, Chairperson, *Hindi diwas* celebration organizing committee and Sr. Scientist delivered the welcome speech. The programme conducted by Dr. Anjesh Kumar, TO.

संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक

संस्थान प्रबंधन समिति की 44वीं बैठक 25 अगस्त 2010 को निदेशक डॉ. रंगनातन रमणि की अध्यक्षता में आयोजित की गई। समिति के सदस्यों में डॉ. ए.के. सरकार, अधिष्ठाता (कृषि), वि.कृ.विवि., राँची श्री के एम अरविन्द, उप निदेशक (विपणन), जे.एस. एफ.डी.सी.एल., राँची, संस्थान के अभि. मुरारी प्रसाद, प्रभारी विभागाध्यक्ष एवं उत्पाद विकास विभाग, डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रभारी विभागाध्यक्ष, लाख उत्पादन विभाग, डॉ. अनिल कुमार जायसवाल, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, अनुसंधान

Institute Management Committee Meeting

The 44th Institute Management Committee Meeting was conducted on 25 August, 2010 under the Chairmanship of Dr R Ramani, Director. The other members of the committee were Dr AK Sarkar, Dean (Ag), BAU, Ranchi; Sh KM Arvind, Dy Director (Mktg), JSFDCL, Ranchi; Er Murari Prasad, I/c Head, PPD Division, Dr AK Singh, I/c Head, LP Division, Dr AK Jaiswal, Pr Scientist & I/c RMU, and Sh Ashok Ghosh, Admn

IMC Meeting in progress

प्रबंध ईकाई एवं श्री अशोक घोष, प्रशा. अधि. बैठक में उपस्थित थे। पूर्ववर्ती बैठक की कार्यवाही पर चर्चा एवं पुष्टि की गई। कार्यसूची में सात नये मुद्दों को समिति के समक्ष रखा गया एवं अनुमोदन के लिए अनुशंसित किया गया।

भा.प्रा.रा.गों.सं. स्थापना दिवस सम्मेलन

संस्थान के 87वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 20 सितम्बर 2010 को ''लाख उत्पादन से जुड़े सामयिक मुद्दे'' विषय पर पणधारियों का दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन नाबार्ड की भागीदारी में संस्थान द्वारा आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री विल्फ्रेड लकड़ा, भा.प्र.से. (सेवानिवृत्त) एवं पूर्व सलाहकार, राज्यपाल, झारखंड, डा. एम.जे. मोदयिक, सदस्य, कृ.वै. चयन मंडल, नई दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री एम.वी. अशोक, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, राँची ने किया। उद्घाटन समारोह में सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले आलेखों का संकलन एवं लाख की खेती संबंधी तकनीक की तीन प्रसार बुलेटिन का विमोचन किया गया। लाख उत्पादन के विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए कुछ व्यक्तियों को पुरस्कार दिये गए। डॉ. वी.के. द्विवेदी, बायोवेद रिसर्च सोसायटी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश को उत्तर प्रदेश ग्रामीण स्तर पर लाख के मूल्यवर्द्धन को प्रोत्साहित करने के लिए, श्री एच के पांडेय, जि.व.अ., कोरबा को कोरबा प्रमंडल, छतीसगढ़ में लाख में उत्कृष्ठ वृद्धि के लिए तथा श्री राजेश सहाय, वित्त व लेखा अधिकारी, भा.प्रा.रा.गों.सं. को संस्थान के वित्तीय प्रबन्धन में योगदान के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त बायोवेद सोसायटी ने लाख के प्रोत्साहन से जुड़े अन्य लोगों को सम्मानित किया।

Lighting of Lamp by the chief guest

इस आयोजन में झारखंड, छतीसगढ़, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, प. बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिकों, लाख कृषकों, उद्यमियों, निर्यातकों, गैरसरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों, राज्य के वन

Officer of the Institute. Proceedings of previous meeting was discussed and confirmed. About seven new important agenda items were put up before IMC for discussion which were recommended for approval.

IINRG Foundation Day Conference

The Institute organized a two-day national conference of stakeholders on 'Issues related to lac production' on 20 September, the 87th Foundation day of Institute with NABARD, Ranchi as partner. The conference was inaugurated by Chief Guest Sh. Wilfred Lakra, IAS(Retired) and former Advisor to Governor of Jharkhand. Dr MJ Modayil, Member, ASRB, New Delhi and Sh. MV Ashok, CGM, NABARD, Ranchi Guest of Honour. A compilation of the talks of the conference and three extension bulletins on lac cultivation technologies were also released in the inaugural ceremony. Awards were also given to persons for their significant contribution to the development of lac production. The awardees included: Dr BK Diwedi, Bio-Ved Research Society, Allahabad, Uttar Pradesh for promotion of value addition of lac at village level in Uttar Pradesh; Sh HK Pandey, DFO, Korba for excellent growth of lac production in Korba Division, Chhattisgarh and Sh Rajesh Sahay, F& AO, IINRG for his contribution towards financial management of the Institute. Besides, Bio-Ved Research Society also felicitated other workers for lac promotion.

Technical session of the conference in progress

The event was attended by 130 participants including scientists, lac farmers, entrepreneurs, exporters, officials from NGOs, State Forest departments and financial institutions from Jharkhand, Chhattisgarh, Madhya Pradesh, Orissa, West Bengal, Andhra Pradesh, Maharashtra

विभागों एवं वित्तीय संस्थानों सहित 130 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जर्मनी के एक अग्रणी चपड़ा निर्माता ने इस मामले में आयातकर्ताओं का पक्ष रखा।

सम्मेलन के तीन सत्रों की अध्यक्षता डॉ. सुरेश प्रसाद, अध्यक्ष, अनु. प.स., डॉ. कौशल किशोर कुमार, पूर्व निदेशक, रा.ली.अनु.कें एवं डॉ. एन.पी.एस. सिरोही स. महानिदेशक (अभि.), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने की। सम्मेलन में अतिथियों, आमंत्रित वक्ताओं के सुझाव प्रस्तुत किये गए। उन्नीस आलेखों एवं विचार विमर्श से निम्नलिखित अनुशंसाएं की गई।

- लाख पर नितिपत्र एवं लाख निदेशालय/ बोर्ड का गठन
- लाख को कृषि उत्पाद माना जाय एवं देश के अन्दर इसके मुक्त आवागमन की अनुमति दी जाय।
- विशेष रूप से झारखंड और प. बंगाल में जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की विफलता पर अनुसंधान करना।
- फसल प्रबन्धन एवं बीहनलाख की उपलब्धता के लिए सूचना नेटवर्क का विकास।
- किसानों की सहायता के लिए सरकारी अनुदान के साथ ऋण एवं फसल बीमा सहित वित्तीय समर्थन, अच्छी फसल के दौरान किसानों को मूल्य समर्थन
- ग्रामीण नियोजन के लिए लाख आधारित कुटीर उद्योगों सहित घरेलू खपत को प्रोत्साहित करना।
- विभिन्न पणधारियों के बीच ज्ञान की भागीदारी विकसित करने के लिए क्रिया अनुसंधान में निवेश के साथ लाख उत्पादन में संविदा आधार पर निजी निवेश को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता।
- लगातार उत्पादन, आपूर्ति एवं मूल्यों में स्थायित्व को सुनिश्चित करने के उपाय।

and Uttar Pradesh. A leading shellac manufacturer from Germany presented importer's perspective on the issues.

These sessions were chaired by Dr Suresh Prasad, Chairman, RAC; Dr KK Kumar, Former Director, NRC Litchi; and Dr NPS Sirohi, ADG (Engg.), ICAR, New Delhi. The following recommendations emerged from the suggestions given by the distinguished guests, invited speakers from the nineteen talks delivered and deliberations during concluding session.

- Need for policy paper on lac and establishment of Lac Directorate/ Board.
- Lac should be treated as farm produce and free movement (inter-state) should be allowed within the country.
- Research for tackling lac crop failure due to climate change especially in Jharkhand and West Bengal.
- Development of information network for crop management and availability of broodlac.
- Financial support including credit and crop insurance with Government subsidy for supporting farmers; price support to farmers during bumper production.
- Boost to domestic consumption including lac-based cottage industries for rural employment
- Need to promote private investment in lac production on contractual basis with investment in action research for developing knowledge partnership amongst different stakeholders.
- Measures to ensure sustainability in production, stability in supply and price.

हास्य कवि सम्मेलन

संस्थान परिसर में 20 सितम्बर 2010 की संध्या को हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई प्रसिद्ध कवियों ने अपनी हास्य रचनाएं प्रस्तुत की जिसमें सर्वश्री सलीम शिवाल्वी (बनारस), कुमार वृजेन्द्र (राँची), कामेश्वर श्रीवास्तव निरंकूश (राँची), बसंत जोशी (धनबाद), जाहिद ऐश (झरिया), शंभुशरण मंडल (धनबाद) तथा संस्थान के डॉ. अंजेश कुमार एवं श्री

Hasya Kavi Sammelan

Hasya Kavi Sammelan

Hasya Kavi sammelan was organized in the Institute campus in the evening of 20 September 2010. Several known poets presented their composition which includes Shri Salim Shivalwi (Varanasi), Shri Kumar Brijendra (Ranchi), Shri Kameshwar Srivastava Nirankush (Ranchi), Shri Basant Joshi (Dhanbad), Shri Jahid Aish (Jharia),

छुट्टन लाल मीणा शामिल हैं। उन्होंने अपनी कविताओं से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। डॉ. एन पी एस सिरोही, सहायक महानिदेशक (अभि.), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने कवियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. रंगनातन रमणि, निदेशक, डॉ. सुरेश प्रसाद, अधिकारी/कर्मचारी एवं परिवारजन भारी संख्या में उपस्थित थे।

अनुसंधान परामर्शदातृ समिति की बैठक

संस्थान की अनुसंधान परामर्शदातृ समिति की सोलहवी बैठक 21–22 सितम्बर 2010 को डॉ. सुरेश प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य बारहवीं योजना की अवधि में जोर देने वाले क्षेत्रों के आलोक में उत्पन्न परिस्थितियों की दृष्टि से अनुसंधान की प्राथमिकताओं को पुनर्केंद्रित एवं पुनर्परिभाषित करना था। बैठक की कार्यवृत तैयार कर उसे परिषद के अनुमोदन के लिए भेजा गया है।

कार्यसंस्कृति पर व्याख्यान

डॉ. एम.जे. मोदयिल, सदस्य, कृ.वै. चयन मंडल, नई दिल्ली द्वारा 18 सितम्बर 2010 को संस्थान में कार्यसंस्कृति पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। अपने संक्षिप्त व्याख्यान में उन्होंने संस्थान की संस्कृति, मूल्यों व मान्यताओं तथा विश्वास के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा की। उनके विचार से संस्था की संस्कृति में नवोन्मेष, जोखिम उठाना, सभी विन्दुओं पर नजर, निष्कर्ष एवं अभिविन्यास इत्यादि शामिल होने चाहिए। उन्होंने विभिन्न देशों में प्रचलित कार्यसंस्कृति पर भी प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि हमारे देश में उन देशों के कुछ अच्छे तरीकों को अपनाना चाहिए ताकि अपनी प्रणाली और भी कार्यकुशल हो सके।

Dr. Modayil addressing the staff members

संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद् की बैठक

24 सितम्बर 2010 को संस्थान संयुक्त कर्मचारी परिषद की बैठक आयोजित की गई। पूर्व बैठक का कार्रवाई रिपोर्ट एवं कार्यसूची पर चर्चा हुई।

Shri S S Mandal (Dhanbad) and Dr. Anjesh Kumar, Shri C.L. Meena from Institute. They entertained the gathering by their satirist poetries. Dr. NPS Sirohi, ADG (Engg.) ICAR New Delhi felicitated the poets. Dr. R.Ramani, Director, Dr. S.Prasad, Chairman RAC and staff members alongwith families were present in this programme.

Research Advisory Committee Meeting

The XVI meeting of Research Advisory Committee (RAC) of the Institute was held during 21-22 September, 2010 under the Chairmanship of Dr Suresh Prasad. The main purpose of the meeting was to refocus and reorient the research priorities in view of current scenario and XII Plan thrust areas and also to examine the new research proposals. The proceedings of the meeting have been drafted and sent to Council for approval.

Lecture on work culture

A guest lecture on 'Work culture' was delivered by Dr MJ Modayil, Member, ASRB, New Delhi on 18 September, 2010. In his brief lecture he covered the main theme of organizational culture, values & assumptions and beliefs. He was of the opinion that organizational culture comprises innovation and risk taking, attention to details, outcome and orientation etc. He has also threw light on work culture prevailing in different countries and emphasized that our country needs to imbibe good aspects from those countries in our work culture to make our system more efficient.

IJSC Meeting

Institute Joint Staff Council meeting was held on 24 September, 2010. ATR of the previous meeting and new agenda items were discussed.

प्रकाशन एवं प्रचार

पुस्तक

- बाबू बंगाली एवं गोस्वामी दीपेन्द्र नाथ, 2010, प्रसंस्करण, रसायन एवं लाख का प्रयोग, डी आई पी ए, भा.कृ.अनु.परि., नई दिल्ली, पृष्ठ–186

अनुसंधान/ लोकप्रिय आलेख

- गोस्वामी दीपेन्द्रनाथ, अंसारी मो. फहीम एवं श्रीवास्तव संजय, 2010, *स्पेक्ट्रल कैरेक्टेरिस्टिक्स ऑफ लैक,* प्रसंस्करण रसायन एवं लाख का प्रयोग (संपा) डी.आई.पी.ए, भा.कृ.अनु. प., नई दिल्ली।
- गुप्ता आर.के. एवं मोनोब्रुल्लाह मो., 2010, जम्मु : लाख उत्पादन की वर्तमान स्थिति, विकास के लिए मुद्दे, सुधार के उपाय एवं समर्थन प्रणाली, करेंट इसूज रिलेटेड टु लैक प्रोडक्शन – मोनोब्रुल्लाह मो, सिंह जयप्रकाश, कुमार अंजेश, रमणि रंगनातन (संपा) भा.प्रा.रा.गों.सं, राँची–पृष्ठ–49–51।
- जायसवाल अनिल कुमार, 2010, *कैपेसिटी विल्डिंग ऑन लैक प्रोडक्षन टेक्नोलॉजिज – स्टेटस एंड फ्यूचर थ्रस्ट* : करेंट इसूज रिलेटेड टु लैक प्रोडक्शन। मोनोब्रुल्लाह मो., सिंह जय प्रकाश, कुमार अंजेश, रमणि रंगनातन (संपा.), भा.प्रा.रा.गों.सं., राँची, पृष्ठ–30–31
- पाल गोविन्द, जायसवाल अनिल कुमार एवं भट्टाचार्य अजय, 2010, *एन एनालिसीस ऑफ ट्रेन्ड एंड वैरिएषन इन प्राइस ऐट डिफरेंट लेवल्स ऑफ मार्केट इन* वेस्ट बंगाल – इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर मार्केटिंग, 24(1):1–5।
- पाल गोविन्द, जायसवाल ए के एवं भट्टाचार्य अजय, 2009, *एन एनालिसिस ऑफ प्राइस स्प्रेड इन मार्केटिंग ऑफ लैक इन* मध्यप्रदेश, इन्डियन जर्नल ऑफ फॉरेस्ट्री, 32(4) : 581–584।
- पाल गोविन्द, 2010, *ग्रोथ एंड इनस्टेविलिटी इन प्रोडक्षन एंड एक्सपोर्ट ऑफ इन्डियन लैक* – इन्डियन फॉरेस्टर 136 (9):1235–1240
- पाटिल पी.एम., अंसारी मो.फहीम, एवं प्रसाद कृष्णमोहन, 2010, *इफेक्ट ऑफ यूरिया एंड थायो–यूरिया ऑन द पर्फॉमेंस ऑफ वाटर सौल्यूबल लैक वार्निसेस,* पेंट इन्डिया, अंक एल एक्स संख्या – 01 पृष्ठ – 77–82।
- रमणि रंगनातन, *नेषनल स्ट्रेटजी फॉर इनहांसिंग लैक प्रोडक्शन,* करेन्ट इसूज रिलेटेड टु लैक प्रोडक्शन – मोनोब्रुल्लाह मो., सिंह जयप्रकाश, कुमार अंजेश, रमणि रंगनातन (संपा), भा.प्रा.रा.गों.सं., राँची, पृष्ठ–1–3।

PUBLICATIONS AND PUBLICITY

Book

- Baboo Bangali and Goswami DN. 2010. Processing, Chemistry and Application of Lac. DIPA, ICAR, New Delhi. 186 pp.

Research/Popular articles

- Goswami DN, Ansari MF and Srivastava S. 2010. Spectral Characteristics of Lac. In Processing, Chemistry and Applications of Lac. Baboo Bangali and Goswami DN (Eds).DIPA, ICAR, New Delhi.
- Gupta RK and Monobrullah Md. 2010. Jammu: Current status of lac production, issues, remedial measures and support system for development. In: Current Issues Related to Lac Production. Monobrullah Md, Singh JP, Kumar Anjesh, Ramani R (Eds.). IINRG, Ranchi, pp. 49-51.
- Jaiswal AK. 2010. Capacity building on lac production technologies- Status and future thrusts. In: Current Issues Related to Lac Production. Monobrullah Md, Singh JP, Kumar Anjesh, Ramani R (Eds.). IINRG, Ranchi, pp. 30-31.
- Pal G, Jaiswal AK and Bhattacharya A. 2010. An analysis of trend and variation in prices of lac at different levels of market in West Bengal. Indian Journal of Agricultural Marketing, 24 (1):1-5
- Pal G, Jaiswal AK and Bhattacharya A. 2009. An analysis of price spread in marketing of lac in Madhya Pradesh. Indian Journal of Forestry, 32 (4) : 581 -584.
- Pal G. 2010. Growth and Instability in production and export of Indian lac. Indian Forester 136(9): 1235-1240.
- Patil PM, Ansari MF and Prasad KM. 2010. Effect of urea and thio-urea on the performance of water soluble lac varnishes. Paint India, Vol. LX No.1, pp. 77-82.
- Ramani R. 2010. National strategy for enhancing lac production. In: Current Issues Related to Lac Production. Monobrullah Md, Singh JP, Kumar Anjesh, Ramani R (Eds.). IINRG, Ranchi, pp. 1-3.

- रंजन संजीव कुमार, मल्लिक सी.बी., विद्यार्थी ए.एस., रमणि रंगनातन (2010) (ऑर्गेनिज्म = *केरिया लैका*) सीओआई जीन, आंशिक, बैंक आईटी 1393545 क्रम 1–6 एचक्यू 323758–63
- रंजन संजीव कुमार, शर्मा टी., विद्यार्थी ए.एस., रमणि रंगनातन (2010) (ऑर्गेनिज्म = *केरिया प्रजाति*) बैंक आईटी 1393735 क्रम 7–23 एचक्यू 323764–80
- रंजन संजीव कुमार, विद्यार्थी ए.एस., रमणि रंगनातन (2010) (ऑर्गेनिज्म = *केरिया प्रजाति*) सीओआई जीन, आंशिक, बैंक आईटी 1393745 क्रम 24–53 एचक्यू 323781–810
- सिद्दिकी एम.जेड., 2009–गुग्गुल–बहुपयोगी औषधीय विविधताएं–कृषक वंदना, 12 : पृष्ठ 15–16।
- सिद्दिकी एम.जेड., 2010–बॉस्वेलिया सेराटा–बहुपयोगी औषधीय संभावनाएं–कृषक वंदना, 7 : जनवरी, 2010 पृष्ठ 21–22
- सिंह रंजय कुमार 2009–*रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रोग्राम ऑफ झारखंड थ्रू पर्टिसिपेटरी अप्रोच* – छोटानागपुर हॉर्टीकल्चर 23(1–4): 13–14
- सिंह रंजय कुमार एवं कुमार, अंजेश, 2010, कृषि में जल संरक्षण–आवश्यकता एवं उपाय–राष्ट्रीय कृषि 5(172): 35–36
- सिंह रंजय कुमार एवं मोनेब्रुल्लाह मो. 2010 *बेर–अ मल्टीपर्पस ट्री*, राष्ट्रीय कृषि, 5(1): 28–29
- श्रीवास्तव संजय, अंसारी एम एफ एवं गोस्वामी दीपेन्द्रनाथ, 2010, *केमिस्ट्री ऑफ लैक डाई एंड लैक वैक्स* : प्रोसेसिंस, केमिस्ट्री एंड एप्लीकेशन्स ऑफ लैक, बाबू बंगाली एवं गोस्वामी दीपेन्द्रनाथ (संपा.) डी आई पी.ए., भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली

- Ranjan S K, Mallick CB, Vidyarthi AS, Ramani R (2010) (organism = *Kerria lacca*) COI gene, partial, Bank It 1393545 seq 1-6, HW 323758-63.
- Ranjan S K, Sharma T, Vidyarthi A S, Ramani R (2010) (organism = *kerria* spp.) Bank It 1393735 Seq 7-23, HQ 323764-80.
- Ranjan S K, Vidyarthi AS, Ramani R (2010) (organism=*Kerria* spp.) COI gene, partial. Bank It 1393745 Seq 24-53, HQ323781-810.
- Siddiqui MZ. 2009. Guggul- *vahupayogi aushdhiya vividhtayen* – Krishak Vandana, 12: pp 15-16.
- Siddiqui MZ. 2010. *Boswellia serata-vahupayogi aushdhiya sambhavnayen*. Krishak Vandana, 7: January, 2010, pp 21-22.
- Singh RK. 2009. Rain water harvesting programmes of Jharkhand through participatory approach. Chotanagpur Horticulture, 23(1-4): 13-14.
- Singh RK and Kumar Anjesh. 2010. *Krishi me jal sanrakshan- Aawshyakta avam upay*. Rashtriya Krishi, 5 (172): 35-36.
- Singh RK and Monobrullah Md. 2010. *Ber* – A multipurpose tree. Rashtriya Krishi, 5 (1): 28-29.
- Srivastava S, Ansari MF and Goswami DN. 2010. Chemistry of lac dye and lac wax. In : Processing, Chemistry and Applications of Lac. Baboo Bangali and Goswami DN (Eds). DIPA, ICAR, New Delhi.

संस्थान के प्रकाशन

- प्राकृतिक राल एवं गोन्द भा.प्रा.रा.गों.सं. समाचार पत्रिका, अंक– 13(4), पृ.–16
- प्राकृतिक राल एवं गोंद भा.प्रा.रा.गों.सं. समाचार पत्रिका, अंक – 14(1), पृष्ठ – 16
- प्राकृतिक राल एवं गोंद भा.प्रा.रा.गों.सं. समाचार पत्रिका, अंक – 14(2), पृष्ठ–08
- भा.प्रा.रा.गों.सं. वार्षिक रिपोर्ट, 2009–10, पृष्ठ–130
- कुमार अंजेश, सिंह जयप्रकाश एवं अंसारी मो. फहीम, 2009, लाक्षा– वार्षिक हिन्दी पत्रिका, पृष्ठ–76

Institute's Publication

- Natural Resins and Gums- IINRG Newsletter,, 13(4), 16 pp.
- Natural Resins and Gums- IINRG Newsletter,, 14(1), 16 pp.
- Natural Resins and Gums- IINRG Newsletter, 14(2): 8 pp.
- IINRG Annual Report, 2009-10, 130 pp.
- Kumar Anjesh, Singh JP and Ansari MF. 2009. Laksha – Annual Hindi Magazine, 76 pp.

- जायसवाल अनिल कुमार एवं सिंह जयप्रकाश–2010 *हाउ टु कल्चर लैक इन्सेक्ट ऑन जीजीफस मॉरिसीयाना – इन्डियन प्लम ट्री* – तकनीकी बुलेटिन, पृष्ठ–24
- जायसवाल अनिल कुमार एवं सिंह जयप्रकाश–2010, *हाउ टू कल्चर लैक इन्सेक्ट ऑन श्लेइचेरा ओलिओसा* (कुसुम) *ट्री* तकनीकी बुलेटिन, पृष्ठ संख्या–20
- जायसवाल अनिल कुमार एवं सिंह जयप्रकाश–2010 *हाउ टु कल्चर लैक इन्सेक्ट ऑन ब्यूटिया मानोस्पर्मा–फ्लेम ऑफ फॉरेस्ट ट्री,* तकनीकी बुलेटिन, पृष्ठ–24
- मोनोब्रुल्लाह मो, सिंह जयप्रकाश, कुमार अंजेश एवं रमणि रंगनातन, 2010 *करेन्ट इसूज रिलेटेड टु लैक प्रोडक्शन, कम्पाइलेशन ऑफ टाक्स,* पृष्ठ–56
- अंसारी मो. फहीम, 2010 लाख आधारित *वाटर थीनेवल इन्टिरियर पेन्ट्स,* प्रसार फोल्डर, पृष्ठ – 04
- अंसारी मो. फहीम, 2010, *इम्प्रूव्ड लैक बेस्ड वुड वार्निश* (हिट एंड वाटर प्रुफ) प्रसार फोल्डर, पृष्ठ – 04

प्रक्षेत्र दौरा

- डॉ. गोविन्द पाल वैज्ञानिक (ववे) एवं श्री मदन मोहन, टी–2 ने छतीसगढ़ के विभिन्न प्रमंडलों/जिलों में लाख से संबंधित गतिविधियों एवं प्रगति की सूचना एकत्र करने के लिए तीन वन प्रमंडलों (धर्मजयगढ़, रायगढ़ एवं चांपा) तथा दो जिलों (रायगढ़ एवं जांजगीर–चांपा) का सर्वे किया।
- श्रीमती भारती पटेल, रिसर्च एसोशिएट ने छतीसगढ़ के विभिन्न प्रमंडलों/जिलों में लाख से संबंधित गतिविधियों एवं प्रगति की सूचना एकत्र करने के लिए छः वन प्रमंडलों (उत्तर सरगुजा, दक्षिण सरगुजा, पूर्व सरगुजा, जसपुर, मनेन्द्रगढ़, कोरिया) तथा तीन जिलों (सरगूजा, जसपुर, कोरिया) का दौरा किया।
- डॉ अजय भट्टाचार्य, प्र.वै., श्री दिलीप कुमार सिंह, त अ एवं श्री रमेश प्रसाद श्रीवास्तव, त.अ. ने 06–07 सितम्बर – 10 को उड़ीसा के तटीय बालासोर जिले में सर्वे किया। रेन ट्री *(समनिया समन)* पर ट्राइवोल्टाइन लाख कीट कॉलोनी देखी गई। सुवर्णरेखा नदी क्षेत्र में मुहाने की जमीन में मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए नदी के दोनो किनारों पर सरकारी विभाग द्वारा भारी संख्या में (लगभग एक लाख) प्रोसोपिस प्रजाति लगाया गया है। इन पौधों को लाख की खेती के लिए उपयोग किया जा सकता है।

- Jaiswal AK and Singh JP. 2010. How to culture lac insect on *Ziziphus mauritiana* – Indian Plum tree. Technical Bulletin, 24 pp.
- Jaiswal AK and Singh JP. 2010. How to culture lac insect on *Schleichera oleosa* (Kusum) tree. Technical Bulletin, 20 pp.
- Jaiswal AK and Singh JP. 2010. How to culture lac insect on *Butea monosperma* – Flame of Forest tree. Technical Bulletin, 24 pp.
- Monobrullah Md, Singh JP, Kumar A and Ramani R. 2010. Current issues related to lac production. Compilation of talks. 56 pp.
- Ansari MF. 2010. Lac based water thinnable interior paints. Extension Folder, pp 4.
- Ansari MF. 2010 Improved lac based wood varnish (Heat and water proof). Extension Folder, pp 4.

Field visit

- Dr G Pal, Scientist (SS) and Shri Madan Mohan, T2 surveyed three forest divisions (Dharamjaigarh, Raigarh and Champa) and two districts (Raigarh and Janjgir-Champa) for collection of information on lac related activities and progress in different divisions/districts of Chhattisgarh.
- Mrs Bharati Patel, RA surveyed six forest divisions (North Sarguja, South Sarguja, East Sarguja, Jashpur, Manendragarh, Koriya) and three districts (Sarguja, Jashpur, Koriya) for collection of information on lac related activities and progress in different divisions/districts of Chhattisgarh.
- Dr A Bhattacharya, PS, Sri DK Singh, TO and Sri RP Srivastava, TO carried out a survey in the coastal Balasore district of Orissa. Trivoltine lac insect colonies were observed on the rain tree (*Samanea saman*). A very large concentration of *Prosopis* spp. (approx. one lakh) plants, raised by the govt. department was observed on both sides of the embankment to check soil erosion in the estuary region of river Subarnarekha. These plants can be exploited for lac cultivation.

- डॉ जयप्रकाश सिंह, व वैज्ञानिक एवं डॉ गोविन्द पाल, वैज्ञानिक (ववे) ने प. बंगाल के बलरामपुर एवं मिदनापुर का दौरा किया। मिदनापुर जिले में रेन ट्री के उपर बड़ी संख्या में ट्राइवोल्टाइन लाख कीट देखे गए।

रेडियो/ टीवी वार्ता

- डॉ सौमेन घोषाल, व वैज्ञानिक ने ''लाख परिपालक के चयन के संदर्भ में लाख की वैज्ञानिक खेती'' विषय पर एक टी वी वार्ता की जिसे ई टी वी के अन्नदाता कार्यक्रम में 10 जून 2010 को प्रसारित किया गया।
- डॉ रंगनातन रमणि, निदेशक ने दूरदर्शन केन्द्र राँची के कृषि दर्शन के अन्तर्गत फोन–इन कार्यक्रम में किसानों को लाख की खेती संबंधी शिक्षा दी।

वैयक्तिक

संगोष्ठी/विचार गोष्ठी/ बैठकों में सहभागिता

निदेशक द्वारा

- 15–16 जुलाई 2010 को एन. ए. एस. सी. परिसर के शिंदे सिंपोजीयम हॉल में निदेशकों की वार्षिक बैठक से सहभागिता एवं संस्थान द्वारा प्रस्तावित कार्यसूची समेत विशेष विन्दुओं पर चर्चा।
- 28–29 जुलाई 2010 को एन.ए.एस.सी. परिसर, नई दिल्ली में भा.कृ.अनु.प.–उद्योग बैठक में सहभागिता जिसमें ज.स्वा. अभियांत्रिकी एवं कपास, जूट, राल तथा गोंद उत्पादों के मूल्यवर्द्धन के विषय क्षेत्र में चुने हुए लाख आधारित प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया गया।
- एकेडमिक स्टाफ महाविद्यालय, राँची विश्वविद्यालय में 25 अगस्त 2010 को आयोजित लाइफ साइंस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि।
- नाबार्ड, राँची के सम्मेलन कक्ष में 04 सितम्बर 2010 को नाबार्ड–आर.आई.एफ. लाख कार्यक्रम की द्वितीय समन्वय समिति बैठक
- 09 सितम्बर 2010 को बि प्रौ संस्थान, मेसरा में आयोजित प्राकृतिक एवं कृत्रिम स्रोतों से अग्रणी अनुसंधान पहल पर क्यू आइ पी – 2010 में ''औषधीय सक्रिय यौगिक के स्रोत के रूप में प्राकृतिक राल एवं गोन्द'' विषय पर व्याख्यान
- भा. कृ. अनु. प. पू. क्षे. अनु. के., राँची में 25 सितम्बर 2010 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में व्याख्यान दिया।

- Dr JP Singh and Dr G Pal visited Balrampur and Midnapur of West Bengal. Trivoltine lac insects have been observed on rain tree in large number in Midnapur district.

Radio / TV talk

- Dr S Ghosal, Sr Scientist delivered a TV talk on "Scientific lac cultivation in reference to selection of lac hosts" which was telecast on 10 June, 2010 in *Annadata* programme of Etv.
- Dr R Ramani, Director, IINRG educated the farmers on lac cultivation in phone- in programme of *Krishi Darshan* in DD Kendra, Ranchi.

PERSONALIA

Seminar/Symposia/Meetings attended

By the Director

- Directors' Annual Meet on 15-16 July, 2010 at Shinde Symposium Hall NASC Complex and interacted on specific points including agenda items proposed by the Institute.
- ICAR-Industry Meet at NASC Complex, New Delhi on 28-29 July, 2010 in which select lac-based technologies were showcased in the theme area of PH Engineering and Value Addition of Cotton, Jute, Resin and Gum Products.
- Valedictory Function of Refresher Course in Life Science organized by ASC, Ranchi University as Chief Guest on 25 August, 2010 at Academic Staff College, RU, Ranchi.
- II Coordination Meeting of NABARD-RIF lac programme on 4 September, 2010 at the Conference Room of NABARD, Ranchi
- QIP-2010 on Lead Discovery Approaches from Natural and Synthetic Sources on 9 September and delivered a lecture on 'Natural resins and gums as source of pharmacologically active compounds' at BIT, Mesra.
- *Hindi Karyashala* at ICAR Research Complex for Eastern Region, Research Centre, Ranchi on 25 September, 2010 as Chief Guest and delivered a talk.

❖ भा.कृ.अनु.प.पू.क्षे.अनु.के., राँची में 27 सितम्बर 2010 को सब्जी सोयाबीन महोत्सव विशेष अतिथि के रूप में व्याख्यान दिया।

अन्य द्वारा

❖ डॉ अजय भट्टाचार्य, प्र. वै. ने. बेर पर कुसमी लाख की खेती पर अभिनव परियोजना संबंधी नाबार्ड, राँची में 02 जुलाई, 2010 को स्वयंसेवी संगठन प्रदान द्वारा प्रस्तुतीकरण एवं विचार विमर्श बैठक में भाग लिया। संस्थान इस परियोजना में परामर्शदातृ सेवा देगा।

❖ श्री अनीस के, वैज्ञानिक ने एन. ए. एस. सी., नई दिल्ली में 26–27 जुलाई, 2010 के दौरान ''भा.कृ.अनु.प. में जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान'' विषय पर आयोजित दो दिवसीय चर्चा सत्र में भाग लिया।

❖ श्री मो. फहीम अंसारी वैज्ञानिक (व वे) ने एन. ए. एस. सी. परिसर, नई दिल्ली में 28–29 जुलाई, 2010 के दौरान आयोजित भा. कृ. अनु. प.– उद्योग बैठक में भाग लिया।

❖ डॉ. निरंजन प्रसाद, व. वैज्ञानिक एन. ए. एस. सी., नई दिल्ली में 28–29 जुलाई 2010 के दौरान आयोजित भा कृ अनु प– उद्योग बैठक में भाग लिया। इस बैठक में संस्थान की तीन प्रौद्योगिकी जैसे लघु स्तरीय लाख प्रसंस्करण इकाई, फल लेपन सुत्रण एवं चपड़ा इमल्शन पेंट प्रदर्शित की गई।

❖ डॉ. (सुश्री) एम.जेड. सिद्दीकी, व. वैज्ञानिक ने बि. प्रौ. सं., मेसरा, राँची के औषधि विज्ञान विभाग द्वारा 09 अगस्त 2010 को आयोजित एवं अ. भा. त. शि. प. द्वारा प्रायोजित क्यू आइ. पी. 2010 कार्यक्रम में ''इम्यूनोटॅक्सिकैन्ट्स एवं उसका प्रभाव'' विषय पर व्याख्यान दिया।

❖ डॉ. अजय भट्टाचार्य, प्र. वैज्ञानिक ने रामकृष्ण मिशन, मोराबादी, राँची के कृषि विज्ञान केन्द्र, दिव्यायन के अनुसंधान परामर्शदात् समिति की 12 अगस्त 2010 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

❖ श्री अनीस के, वैज्ञानिक ने एकेडमिक स्टाफ महाविद्यालय, राँची विश्वविद्यालय में आयोजित लाइफ साईंस के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में 12 अगस्त 2010 को *''प्रोटीन–प्रोटीन इन्टेरैक्षन टेक्नीक इन प्रैक्टिष''* एवं *''प्रोटीन–डी एन ए टेकनीक इन प्रैक्टिस''* विषयों पर दो व्याख्यान दिये।

❖ श्री मो. फहीम अंसारी, वैज्ञानिक (ववे) ने 17–18 अगस्त 2010 को वाइ एस पी बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नउनी, सोलन में प्राकृतिक राल एवं गोंद के संग्रहण, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्द्धन की नेटवर्क परियोजना की द्वितीय समन्वय समिति की बैठक में भाग लिया।

❖ *Subji Soyabean Mahotsava* on 27 September, 2010 as Special Guest at ICAR Research Complex for Eastern Region, Research Centre, Ranchi and delivered a talk.

By others

❖ Dr A Bhattacharya, Pr. Scientist attended the meeting at NABARD, Ranchi on 02 July, 2010 for discussion on the presentation by the NGO PRADAN, Ranchi on the Innovative project on *kusmi* lac cultivation on *ber*. The role of the Institute would be to provide necessary consultancy in the project.

❖ Shri Anees K, Scientist attended two day interaction session on "Biotechnology research in ICAR" at NASC, New Delhi during 26-27 July, 2010.

❖ MF Ansari participated in 'ICAR – Industry Meet 2010' held at NASC complex, New Delhi during 28-29 July, 2010.

❖ Dr Niranjan Prasad, Sr. Scientist Participated in the ICAR Industry Meet 2010 at NASC New Delhi on 28-29 July, 2010. Three technologies *i.e.* Small Scale Lac Processing Unit, Fruit Coating Formulation and Shellac Emulsion Paint of the Institute were displayed in the Meet.

❖ Dr (Ms) MZ Siddiqui, Sr. Scientist delivered a lecture on "Immunotoxicants and their effects" on 09 August, 2010 in AICTE sponsored QIP 2010 Programme organized by Department of Pharmaceutical Sciences, BIT, Mesra, Ranchi.

❖ Dr A Bhattacharya, Pr. Scientist attended the Research Advisory Committee meeting of KVK, Divyayan, Ramakrishna Mission, Morabadi, Ranchi on 12 August, 2010.

❖ Shri Anees K, Scientist delivered two lectures on "Protein-protein interaction: techniques in practice" and "protein-DNA interaction techniques in practice" in connection with the refresher course on life sciences at UGC Academic Staff College, Ranchi University on 12 August, 2010.

❖ Shri MF Ansari participated in 2nd Coordination committee meeting of Network project 'Harvesting, Processing and Value addition of Natural Resins and Gums' held at YSPUH&F Nauni, Solan during 17-18 August, 2010.

मानव संसाधन विकास

- डॉ मो मोनोब्रुल्ला, व वैज्ञानिक ने स्नातकोत्तर (विज्ञान) की दो छात्राओं, राँची विश्वविद्यालय की सुश्री शिवानी मांझी एवं राँची महिला महाविद्यालय की सुश्री इन्दु महतो को तीन माह के शोध प्रबंध कार्य के अन्तर्गत क्रमशः ''भारतीय लाख कीट केरिया लैका केर *(टैकार्डी होमोप्टेरा)*'' एवं ''भारतीय लाख कीट *केरिया लैका* केर *(टैकार्डी ' होमोप्टेरा)* तथा उससे जुड़े जीव–जन्तु विषय पर निर्देशित किया।
- श्री अनीस के, वैज्ञानिक ने विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग की स्नातकोत्तर (विज्ञान) की छात्रा श्रीमती कामिनी कौशल एवं श्रीमती पल्लवी कुमारी को छः माह के शोध प्रबन्ध कार्य के अन्तर्गत क्रमशः ''लाख संचारण द्वारा प्रभावित पलास *(ब्यूटिया मोनोस्पर्मा)* की जैव रासायनिक स्थिति'' एवं *''निकोटियाना टेवैकम* से *ओस्मोटिन* का अभिव्यक्तिकरण एवं शुद्धिकरण'' शीर्षक विषय पर निर्देशित किया।
- डॉ. सौमेन घोषाल, व. वैज्ञानिक ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद में 6–11 अगस्त 2010 की अवधि में ''पारगमन से एन ए आई एस के लिए नेतृत्व'' (एन ए आइ पी, नार्म द्वारा प्रायोजित) विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- डॉ. अजय कुमार सिंह, प्र.वै. ने एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इन्डिया, हैदराबाद में 06–17 सितम्बर 2010 की अवधि में ''विज्ञान प्रशासन एवं अनुसंधान प्रबंधन'' विषय पर प्रशिक्षण में भाग लिया।
- श्री शरतचन्द्र लाल, सहायक ने आइ एस टी एम, नई दिल्ली में 6–8 सितम्बर 2010 की अवधि में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

Human Resource Development

- Dr Md. Monobrullah, Sr Scientist guided two M.Sc. students, Shivani Majhi from Ranchi University, Ranchi and Indu Mahto from Ranchi Women's College, Ranchi for three months dissertation work on "Life history and morphology of Indian lac insect, *Kerria lacca* Kerr (Tachardiidae: Homoptera)" and "Indian lac insect, *Kerria lacca* Kerr (Tachardiidae: Homoptera) and associated biotic fauna", respectively.
- Shri Anees K, Scientist guided six month dissertation work of two M.Sc (Biotechnology) students, Mrs. Kamini Kaushal and Mrs. Pallavi Kumari from Vinoba Bhave University, Hazaribagh on the projects entitled "Biochemical status of *palas* (*Butea monosperma*) as affected by lac inoculation" and "Expression and purification of osmotin from *Nicotiana tabaccum*" respectively.
- Dr S Ghosal, Sr Scientist attended workshop on "Leadership for Transition to NAIS" (Sponsored under NAIP, NAARM) at National Academy of Agricultural Research Management, Rajendranagar, Hyderabad during 6-11 August, 2010.
- Dr AK Singh, Principal Scientist attended training on "Science Administration and Research Management" at Administrative Staff College of India, Hyderabad during 6- 17 September, 2010.
- Shri SC Lal, Asstt., participated in 3 days Workshop on Noting and Drafting at ISTM, New Delhi during 6-8 September, 2010.

विविध

प्रमुख आगन्तुक

- डॉ. एम. निलीमा करकेट्टा, भा.प्र.से., जनजातिय कल्याण आयुक्त, झारखंड सरकार, 02 जुलाई 2010।
- श्री रंजन चटर्जी, भा.प्र.से., सलाहकार, योजना आयोग, 22 जुलाई 2010
- श्री एस एस विष्ट, प्र.मु.व.सं. एवं प्र.नि., प बंगाल वन विकास निगम, कोलकाता, 30 जुलाई, 2010।

MISCELLANEA

Important Visitors

- Dr M Neelima Kerketta, IAS, Tribal Welfare Commissioner, Govt of Jharkhand on 2 July, 2010.
- Shri Ranjan Chatterjee, IAS, Consultant, Planning Commission on 22 July, 2010.
- Shri S S Bist, PCCF and MD, W.B. Forest Dev. Corp., Kolkata on 30 July, 2010.

- श्री एम.ओ.एच. फारूक, महामहिम राज्यपाल, झारखंड, 05 अगस्त 2010
- श्रीमती वी विश्वनाथ, मु. का. अधि., उद्योगिनी, नई दिल्ली, 12 अगस्त 2010
- डॉ. एन.पी.एस. सिरोही, स. महानिदेशक (अभि.), भा.कृ.अनु.प , नई दिल्ली एवं डॉ. सुरेश प्रसाद, अध्यक्ष, अनु.प.स., 20 सितम्बर 2010
- श्री बी वोल्वर्ट, एस एस बी स्ट्रोबर सी एम बी एच एंड कम्पनी, जर्मनी ने 20 सितम्बर 2010 को संस्थान के स्थापना दिवस पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया एवं ''लाख की आपूर्ति : आयातकर्ताओं के परिप्रेक्ष्य में'' विषय पर व्याख्यान दिया। उनके साथ भारतीय लाख की आपूर्ति की समस्या पर चर्चा की गई। प्रसंस्करण एवं उत्पाद विकास से जुड़े वैज्ञानिकों के साथ उनकी एक चर्चा बैठक भी हुई उन्होंने भारत में लाख के व्यवस्थित बागान में लाख उत्पादन के विकास में गहरी रूचि दिखाई। उन्होंने राँची जिले के मांगूबांध गाँव का दौरा किया तथा लाख उत्पादकों से बातें कीं।

HE Governor of Jharkhand taking a glance of lac insect

- Mr. M O H Farooq, His Excellency Governor of Jharkhand on 05 August, 2010.
- Mrs V Vishwanath, CEO, Udyogini, New Delhi on 12 August, 2010.
- Dr NPS Sirohi, ADG (Engg), ICAR, New Delhi.
- Dr Suresh Prasad, Chairman, RAC on 20 September, 2010.
- Mr B Volbert, SSB Stroever GmbH & Co, Germany was at the Institute to participate in the FD Conference organized by the Institute and also delivered a talk on "Supply of lac : Importers perspective." The problems related to supply of Indian lac was discussed with him; an interactive session was held with the scientists working on processing and product development. He showed keen interest in development of lac production in systematic plantations in India. He also visited Mangoobandh village of Ranchi district and interected with lac growers.

Mr B Volbert during presentation

Mr B Volbert interacting with lac growers *et al* at Mangoobandh village

आधारभूत ढांचा

- एन. ए. आई. पी. – एल. आई. डी. के अन्तर्गत रेफ्रिजेरेटेड इन्क्यूबेटर सेकर एवं पी सी आर मशीन क्रय किया गया
- वेट एब्रेशन स्क्रब टेस्टर

Infrastructure Development

- Refrigerated incubator shaker and PCR Machine were purchased under NAIP-LID.
- Wet Abrasion Scrub Tester.

कार्यभार ग्रहण

- डॉ. अनिल कुमार जायसवाल, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण विभाग के अध्यक्ष के पद पर चयन के पश्चात, 25 अगस्त 2010 को कार्यभार ग्रहण किया गया।
- डॉ. ए मोहन सुन्दरम ने 27 अगस्त 2010 को वैज्ञानिक (कृषि कीटविज्ञान) के पद पर योगदान किया।
- प्रधान वैज्ञानिक के पद पर चयन के पश्चात डॉ. निरंजन प्रसाद, व. वैज्ञानिक ने 01 सितम्बर 2010 को कार्यभार ग्रहण किया।

Dr A Mohanasundaram

पदोन्नति

- श्री कुमार महेन्द्र सिन्हा, टी–6 को 01 फरवरी 2005 से टी (7–8) पद पर प्रोन्नत किया गया।
- श्रीमती सुशान्ति प्रसाद, पी ए को 01 जुलाई 2010 से निजी सचिव के पद पर प्रोन्नत किया गया।
- श्री शत्रुघन कुमार यादव, स्टेनो को 01 जुलाई 2010 से पी ए पद पर प्रोन्नत किया गया।

गुणवत्ता मूल्यांकन प्रयोगशाला

- रिपोर्ट की अवधि में उद्यमियों/ व्यापारिक घरानों/ संस्थान के विभिन्न विभागों से प्राप्त 28 नमूनों का 93 परीक्षण किया गया।

(दीपक घोष)

Joining

- On the selection to the post of Head, Transfer of Technology Division, IINRG, Ranchi, Dr AK Jaiswal has taken over the charge on 25 August, 2010 (A/N).
- Dr A Mohanasundram joined as Scientist (Agril. Entomology) on 27 August, 2010. (Photo)
- On the selection to the post of Principal Scientist, IINRG, Ranchi Dr Niranjan Prasad has taken over the charge on 01 September, 2010 (A/N).

Promotion

- Sh KM Sinha, T-6 promoted to the post of T-(7-8) *w.e.f.* 01 February, 2005.
- Smt Sushanti Prasad, PA promoted to the post of Private Secretary *w.e.f.* 01 July, 2010.
- Sh SK Yadav, Steno promoted to the post of PA *w.e.f.* 01 July, 2010.

Quality evaluation laboratory

- The laboratory carried out 93 tests on 28 samples received from entrepreneurs/business houses/ different divisions of the Institute.

(D Ghosh)

संकलन, सम्पादन एवं निर्माण
डॉ. जयप्रकाश सिंह
डॉ. सौमेन घोषाल
श्री मो. फहीम अंसारी
डॉ. अंजेश कुमार
अनुवाद
डॉ. अंजेश कुमार
तकनीकी सहायता
श्री मदन मोहन
छाया चित्र
श्री रमेश प्रसाद श्रीवास्तव
प्रकाशक
डॉ. रंगनातन रमणि, निदेशक

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोन्द संस्थान
(पूर्व भारतीय लाख अनुसंधान संस्थान)
नामकुम, राँची–834010, झारखण्ड
दूरभाष : 0651–2260117
2261156 (निदेशक)
फैक्स : 0651–2260202
ईमेल : iinrg@ilri.ernet.in, lac@ilri.ernet.in
हमसे सम्पर्क करें : www.icar.org.in/iinrg/default.htm
: http://ilri.ernet.in

शोक संदेश

श्री बुद्धु साव, कुशल स्पोर्टिज स्टाफ का 13 सितम्बर 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। श्री साव ने संस्थान में 12.06.1981 को एस जी–1 पर योगदान किया एवं प्रोन्नति पाकर 09.09.2009 तक कुशल सपोर्टिंग स्टाफ बने। निदेशक एवं स्टाफ ने श्री साव के मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

Obituary

Sh. Budhu Saw, SSS, suddenly expired on 13 September, 2010. Shri Saw joined the Institute on 12-06-1981 as SG-I and gradually reached to the post of Skilled Supporting Staff on 09-09-2009. The Director and staff members of the Institute mourned the death of Shri Saw.

Compiled, Edited and Produced by
Dr JP Singh
Dr S Ghoshal
Shri MF Ansari
Dr Anjesh Kumar
Translation
Dr Anjesh Kumar
Technical Assistance
Shri Madan Mohan
Photographs
Shri R P Srivastva
Published by
Dr R Ramani, Director

Indian Institute of Natural Resins and Gums
(Formerly Indian Lac Research Institute)
Namkum Ranchi - 834 010
Jharkhand
Phone : 0651-2260117
2261156 (Director)
Fax : 0651-2260202
e-mail : iinrg@ilri.ernet.in, lac@ilri.ernet.in
Visit us at : www.icar.org.in/iinrg/default.htm
: http://ilri.ernet.in

2107/10/10 • KPC • TEL. : 0651- 2532251